E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

सर्वप्रथम आसन पर बैठा हुआ राजा एवं विदूषक दिखलायी देते हैं। राजा दुष्यन्त हंसपदिका के गीत को सुनकर अत्यधिक उत्कण्ठित हो जाता है तथा विदूषक से कहता है कि हंसपदिका ने अति सुन्दर गीति गायी है।

कञ्चुकी आकर कण्व शिष्यों के आगमन की सूचना देता है। नेपथ्य में दो स्तुति पाठक राजा का स्तुतिगान करते हैं। राजा दुष्यन्त यज्ञशाला में शकुन्तला सहित गौतमी तथा कण्व के दोनों शिष्यों से मिलता है। तभी शकुन्तला का वामेतर नेत्र फड़कने लगता है। अमङ्गल की आशङ्का से वह भयभीत हो जाती है। दुर्वासा के शाप के कारण राजा सारा प्रणय वृत्तान्त भूल जाता है। अति लावण्यवती शकुन्तला को देखकर वह उसकी ओर आकृष्ट होता है। वह शार्ङ्गरव तथा शारद्वत से कुशल-क्षेम पूछता है। वे दोनों ऋषि कुमार राजा को कण्व का सन्देश सुनाते हैं- “शकुन्तला तथा दुष्यन्त के गान्धर्व विवाह का मैंने अनुमोदन कर दिया है अतः गर्भवती शकुन्तला को आप स्वीकार करें”। राजा यह सुनकर आश्चर्यान्वित हो जाता है और शकुन्तला के साथ विवाह की घटना को असत्य बतलाता है।

गौतमी शकुन्तला का मुख दिखाती है फिर भी राजा नहीं पहचानता। शकुन्तला अभिज्ञान (अंगूठी) को दिखाने का उपक्रम करती है परन्तु इससे पूर्व कि वह शङ्का का निवारण करे, देखती है कि अंगूठी अंगुली में नहीं है। गौतमी कहती है कि वह अंगूठी शक्रावतार में शचीतीर्थ के जल की वन्दना के समय गिर गयी है। शकुन्तला संयोग के दिनों के मधुर प्रसङ्गों को सुनाती है पर राजा को कुछ भी याद नहीं आता। अंगूठी न दिखा पाने के कारण राजा शकुन्तला को कपट-व्यवहार करने वाली स्त्री समझता है। इस पर क्रोधावेश में शारद्वत राजा को खरी-खोटी सुनाता है और शकुन्तला को वहीं छोड़कर चला जाता है। उसी के साथ शार्ङ्गरव और गौतमी भी चली जाती हैं।

राजा अनिश्चयावस्था में पड़ जाता है। ऐसी स्थिति में राजगुरु स्थिति संभालता है। वह कहता है कि सन्तानोत्पत्ति तक शकुन्तला उसके घर रहेगी। यदि सिद्ध पुरुषों की भविष्यवाणी के अनुसार शकुन्तला से उत्पन्न पुत्र चक्रवर्ती लक्षणों से समन्वित होगा तो शकुन्तला को अन्तःपुर में स्थान दिया जायेगा, अन्यथा दोनों को कण्वाश्रम में पहुँचा देना उचित होगा। राजा सहमत हो जाता है। शकुन्तला रोती हुई पुरोहित के पीछे चल पड़ती है। इतने में ही अप्सरा तीर्थ में स्त्री के रूप में एक दिव्य ज्योति उसे उठा ले जाती है। इस घटना से राजा को सन्देह होता है कि कहीं वह भूल तो नहीं कर रहा है।